

## अक्षय तृतीया

श्री परशुराम अवतार दिवस पर बधाइ।

जगत ने जिनका विलोका मात्र भीषण मन्यु है।

जेय जिनको नर नरेतर विक्रमी शतमन्यु है।

मन्यु जगका भी हरा था, किया विस्मृत लोक ने।

किए आश्रम पुनः दीपित मन्यु के आलोक ने।

मात्र हैहय सहस भुज छेदक जिन्हें जन मानते।

थे स्वयं अवतार हरि के लोग कितने जानते।

ध्वंस तत्कृत पृथित बहु निर्माण विस्मृत हो गया।

धर्म संस्थापन महत जो कार्य था वह खो गया।

तुम चिरंजीवी अतः अतिखेद से सब देखते।

आर्य जन की अज्ञता को न्यून करके लेखते।

शस्त्र शास्त्रों का सुसंगम आपका विश्वास था।

रुका जिससे आर्य संस्कृति का शुभेतर ह्लास था।

तुम्हारा सिद्धान्त जो शिव शक्ति के संयोग का।

सदा ही साधक रहा उत्कर्ष के अनुयोग का।

जब हुई इसकी उपेक्षा भरत भू हारी तभी।

शक्ति के बिन कौन प्राणी जगत में है विगतभी।

हिंसना भी श्लाघ्य है यदि लोक का कल्याण हो।

शक्ति है वह गेय कंपित दनुज के यदि प्राण हों।

पराक्रम वह वंद्य है जो लोक भय हारक बने।

जो उड़ा दे प्रभंजनवत पाप के अंबुद घने।

क्षमा भी वह निंद्य है यदि पापवर्धन कारिणी।

शक्ति वह है मोघ यदि वह नहीं जगभय हारिणी।

जान यदि निष्क्रिय जगत के ताप हर सकता नहीं।

विनय शठ को कभी जग में विजित कर सकता नहीं।

भीति यदि दुर्जन हृदय में सुशासन कहते उसे।

राजदण्डान्वित न कर हो कुशासन कहते उसे।

पंगु है वह नीति यदि निश्चित न हो अनुपालना।

शांति पथ क्या असुर के अनुरूप निज को ढालना॥

वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) विक्रम संवत 2077

कानपुर

पण्डित शिव कुमार मिश्र